Dainik Bhaskar (Ahmedabad) 1 October, 2017

### आठ राज्यों के 56 शहरों का ट्रेंड : काजू कतली और लड्डू हैं टॉप 3 पसंद में शामिल

# देश की पहली पसंद गुलाब जामुन, इस दीपावली पर 3200 करोड़ के बिकेंगे

धर्मेन्द्र सिंह भदौरिया | नई दिल्ली
केतन सिंह राजपूत | अहमदाबाद,
भरत सिसौदिया | जयपुर

देश में बिकने वाली सभी मिठाइयों में गुलाब जामुन-रसगुल्ला को सबसे अधिक पसंद किया जा रहा है। इसके बाद काजू कतली और लड्डू टॉप-3 पसंद हैं। यह ट्रेंड सामने आया है भास्कर द्वारा 8 राज्यों के 56 शहरों की प्रमुख मिठाई की दुकानों से बात करने पर। ऐसी ही बात उद्योग संगठन एसोचैम के अध्ययन में भी सामने आई है। भास्कर टीम ने 100 साल से ज्यादा से मिठाई कारोबार कर रही प्रतिष्ठित दुकानों के संचालकों से भी बातचीत की है। दिल्ली में मिठाई की दुकान चला रहे तरुण साहनी कहते हैं कि अब ट्रेंड बदल रहा है। हमारी पिस्ता बर्फी सर्वाधिक प्रसिद्ध है, लेकिन दीपावली पर हम गुलाब जामुन और रसगुल्ला सर्वाधिक बेचते हैं। वे कहते हैं कि अब लोग स्वास्थ्य के प्रति ज्यादा सचेत हैं इसलिए घी, ज्यादा मीठी और मावा वाली मिठाइयां खरीदने से बचते हैं।

एसोचैम के अनुसार देश में 65 हजार करोड़ रुपए से अधिक का मिठाई का बाजार है। इस दीपावली पर करीब 16 हजार करोड़ रु. की मिठाई बिकने का अनुमान है। पिछले वर्ष की तुलना में यह 10 से 15% अधिक बिकेगी। इन आंकड़ों में चॉकलेट की बिक्री शामिल नहीं है। मिठाई की कुल बिक्री में 20 से 25% हिस्सेदारी गुलाब जामुन-रसगुल्ला की है। अन्य पसंद की जाने वाली मिठाइयों में मैसूर पाक, बादाम हलवा, सोन पापड़ी और बंगाली मिठाइयां हैं। जानकारों के मुताबिक बीते सालों में यह बदलाव आया है कि लोग अब मिठाई में कम शक्कर पसंद कर रहे हैं। साथ ही स्वास्थ्य कारणों और मिलावट की आशंका के कारण बेसन से बनी मिठाइयों की बिक्री बढ़ी है। जबकि मावा से बनी मिठाइयों की बिक्री अपेक्षाकृत गिरी है। शेष भारत की तुलना में दक्षिणभारत में अपेक्षाकृत कम मात्रा में मिठाई खाई जाती है। इस संबंध में बात करते हुए एसोचैम के सेक्रेटरी जनरल डीएस रावत ने कहा कि देश में साल दर साल के आधार पर देखें तो 10 से 12 फीसदी की रफ्तार से यह बाजार बढ़ रहा है। लोग कम कैलोरी की मिठाइयां पसंद कर रहे हैं। मिठाई बाजार में 70 फीसदी हिस्सेदारी असंगठित क्षेत्र या अन ब्रांडेड मार्केट की है। चॉकलेट, बेकरी और ड्रायफ्रूट सेक्टर की जबतक बाजार में पैठ नहीं बनी थी तब तक मिठाई बाजार प्रतिवर्ष 25 से 30 फीसदी की रफ्तार से बढ़ रहा था। मिलावटी मिठाई आदि की खबरों के बाद इसकी रफ्तार घटी है। मिठाई बनाने वालों को पैकेजिंग और मार्केटिंग को और दुरुस्त करना चाहिए इसके बाद यह और तेजी से बढ़ सकती है। गौरतलब है कि बीते वर्ष देश में करीब 14 हजार करोड़ रु. की मिठाई बिकने का अनुमान था। छत्तीसगढ़ के मिठाई व्यापारी रवि अग्रवाल कहते हैं कि गिफ्ट देने के लिए सूखी मिठाई सहित ड्रायफ्रूट का चलन बढ़ा है। काजू के आइटम की डिमांड भी बढ़ी है। मुझे लगता है अब स्वास्थ्य को लेकर लोग ज्यादा जागरुक हो रहे हैं इसलिए ज्यादा मिठास से परहेज कर रहे हैं। पहले मावे की मिठाई ज्यादा बिकती थीं लेकिन अब कम हो गई है। शेष | पेज 8 पर

## दिवाली पर 16 हजार करोड़ की मिठाइयां बिकने का अनुमान

▪ श्याम द्विवेदी|पानीपत ▪ महेश जोशी|औरंगाबाद ▪ कुणाल पेठे|वडोदरा ▪ इमरोज़ ख़ान|ग्वालियर ▪ सुभाष चंदेर|हिसार

### गुजरात में लड्डू ज्यादा, आधी रह गई है मावा की मिठाई

वडोदरा में 200 साल से मिठाई का कारोबार करने वाले उमाकांतभाई बताते हैं कि परंपरागत मिष्ठान घी से बनते हैं। खोआ की मिठाइयां कुछ समय बाद घी छोड़ने लगती हैं। इसलिए त्योहार में लोग मैसूर पाक, मोतीचूर के लड्डू एवं काजू की मिठाई ज्यादा खरीदते हैं। वडोदरा के मिष्ठान कारोबारी राकेश सुखड़िया कहते हैं कि पहले 70% मिष्ठान खोआ के बनते थे। 5 साल में यह घट कर 35-40% तक आ गया है। हालांकि ट्रेडिशनल मिष्ठान की मांग में 50% इजाफा हुआ है। अहमदाबाद में काजू कतली और ड्रायफ्रूट्स की मिठाई ज्यादा पसंद की जा रही है।

### महाराष्ट्र में ट्रेडिशनल मिठाई के बराबर काजू कतली

औरंगाबाद में करीब दस सालों से त्योहारी सीजन में मावा (खोआ) से बनी मिठाइयों का चलन था। लेकीन दो सालों से काजू कतली, काजू कमल, काजू गजक जैसी मिठाइयां ज्यादा बिकने लगी हैं। बीड़ शहर में भी पारंपरिक मिठाइयों की जगह अब काजू कतली ने ली है। सोलापूर में ट्रेडिशनल मिठाइयां जैसे गुलाब जामुन, पेड़ा, लड्डू की मांग अब भी बरकरार है। लातूर में भी दूध से बनाई मिठाई की मांग बढ़ी है। बंगाल का रसगुल्ला और काजू कतली ग्राहक ज्यादा पसंद करने लगे हैं। उस्मानाबाद में 36 साल से यहां के खोआ से बने गुलाब जामुन का राज आज भी चल रहा है।

### पंजाब में मिल्क केक की धूम

जालंधर के लवली स्वीट ग्रुप के वाइस चेयरमैन नरेश मितल के अनुसार पहले मोती चूर के लड्डुओं की डिमांड रहती थी। अब सिर्फ शगुन के तौर पर ही इसे लिया जाता है। काजू बर्फी, ड्रायफ्रूट, मिठाई, मिल्क केक, खोवा से बनी मिठाइयां अब ज्यादा बिक रही हैं। नवांशहर के दुकानदारों के अनुसार पिछले 4-5 साल से शुगर फ्री मिठाइयों तथा ऐसी मिठाइयों का चलन बढ़ा है, जिनमें मीठा कम हो। गुलाब जामुन, बर्फी व मिल्क केक की मांग बरकरार है। गुरदासपुर में अब पिस्ता बर्फी, चॉकलेट बर्फी, कोकोनट बर्फी पसंद करते हैं। पटियाला में पहले के मुकाबले जलेबी के खरीदार अब चुनिंदा रह गए हैं।

### हरियाणा में मूंग की मिठाई बढ़ी

हरियाणा हलवाई एसोसिएशन के वरिष्ठ उपप्रधान सुरेश कुमार गुप्ता बताते हैं कि सही दूध न मिल पाने के कारण हलवाइयों को खासी परेशानी का सामना करना पड़ता है। इन दिनों डेयरियों के अंदर ही दूध पाउडर के जरिए मिठाई बन रही है। पानीपत के प्रमोद कुमार ने बताया कि अब लोग काजू और मूंग दाल से बनी मिठाइयां ज्यादा खरीदते हैं। मावे की मिठाई खरीदने से बचते हैं। हिसार के प्रतिष्ठित दुकानदारों ने बताया कि हमारे यहां सबसे ज्यादा गुलाब-जामुन, रसगुल्ला बिकता है। त्योहारों में इनकी डिमांड काफी बढ़ जाती है। ग्रामीण इलाकों में यहां आज भी जलेबी बहुत बिकती है।

### मावे में मिठास कम, देशी घी से बनी मिठाइयां लौटी

जयपुर। राजस्थान में अधिकतर शहरों में पिछले चार से पांच सालों में जब से नकली दूध, नकली मावा मार्केट में आने लगा तब से मावे की मिठाइयों का प्रयोग घटा है। वहीं एक बार फिर से देसी घी से बनी मिठाइयां लौट आई। इसमें काजू रोल, काजू कतली, बादाम बर्फी, पिस्ता हलवा आदि शामिल हैं। किशन मिष्ठान भंडार के हुकमचंद अग्रवाल ने बताया कि पहले मिठाई में 60% मावा व 40%चीनी यानी मिठास डाली जाती थी। लेकिन अब यह अनुपात 75 मावा व 25% चीनी रह गई है। यानी लोग कम मीठी मिठाइयां पसंद कर रहे हैं।

Divya Marathi (Nashik) 1 October, 2017

## ८ राज्यांतील ५६ शहरांचा कल : काजू कतली, लाडू टॉप ३ मध्ये

# गुलाब जामुनला पहिली पसंती, या दिवाळीत ३२०० कोटींची विक्री

धर्मेंद्रसिंह भदौरिया । नवी दिल्ली, केतनसिंह राजपूत । अहमदाबाद, भरत सिसौदिया । जयपूर

दिल्लीच्या मयूर विहारमध्ये राहणारे व्ही. सुमन सणाच्या हंगामात आता रसगुल्ले जास्त खरेदी करतात. ते म्हणाले की, आता खाण्याचा ट्रेंड बदलला आहे. आधी मी खव्याची मिठाई घेत होतो, पण भेसळीच्या भीतीमुळे रसगुल्ले-गुलाब जामुन जास्त खरेदी करतो. ही आवड फक्त सुमन यांचीच नाही. देशात विकणाऱ्या सर्व मिठायांत गुलाब जामुन-रसगुल्ला यांना सर्वाधिक पसंती आहे. दिल्लीतच १९७० पासून मिठाईचे दुकान चालवणारे तरुण साहनी म्हणाले की, आता ट्रेंड बदलत आहे. आमची पिस्ता बर्फी सर्वात प्रसिद्ध आहे, पण दिवाळीत आम्ही गुलाब जामुन आणि रसगुल्ले जास्त विकतो. आता लोक आरोग्याप्रति जास्त सतर्क आहेत. त्यामुळे तूप, जास्त गोड आणि खव्याची मिठाई ते खरेदी करत नाहीत.

असोचेम या उद्योग संघटनेने म्हटले आहे की, देशात या वर्षी ६५ हजार कोटी रुपयांपेक्षा जास्तीची मिठाई खरेदी होईल, असा अंदाज आहे. या दिवाळीला सुमारे १६ हजार कोटी रुपयांची मिठाई विकली जाण्याची शक्यता आहे. गेल्या वर्षीच्या तुलनेत ती १० ते १५ टक्के जास्त विकेल. या आकड्यांत चॉकलेटची विक्री समाविष्ट नाही. देशात सर्वाधिक पसंत केली जाणारी मिठाई म्हणजे गुलाब जामुन-रसगुल्ला. त्यानंतर लाडू आणि काजू कतली यांना पसंती आहे. इतर पसंतीच्या मिठायांत म्हैसूरपाक, बदाम हलवा, सोनपापडी आणि बंगाली मिठाया यांचा समावेश आहे. अलीकडे लोक ऑनलाइन मिठाई खरेदी करत आहेत. मिठाई व्यावसायिक आणि तज्ज्ञांच्या मते, लोकांना आता मिठाईत कमी साखर हवी असते. त्याचबरोबर आरोग्यविषयक कारणे व भेसळीची शंका यामुळे बेसनापासून तयार मिठायांची विक्री वाढत आहे. खव्यापासून तयार मिठायांची विक्री अपेक्षेनुसार कमी झाली आहे. उर्वरित : महिला विश्व पानावर

## दिवाळीत १६ हजार कोटींची मिठाई विकली जाण्याची शक्यता

▪ महेश जोशी । औरंगाबाद ▪ प्रवीण पवार । उस्मानाबाद, ▪ बडोदा इमरोज खान, ▪ श्याम द्विवेदी । पानिपत

### महाराष्ट्रात पारंपरिक मिठाईसोबतच काजू कतली

औरंगाबादमध्ये दहा वर्षांपासून सणाच्या दिवसांत खव्याच्या मिठाया घेतल्या जात. पण दोन वर्षांपासून काजू कतली, काजू कमल, काजू गजक यांसारख्या मिठाया विकत आहेत. बीड शहरातही पारंपरिक मिठायांची जागा आता काजू कतलीने घेतली आहे. सोलापूरमध्ये गुलाब जामुन, पेढा, लाडू या पारंपरिक मिठायांची मागणी अजूनही कायम आहे. लातूरमध्ये दुधापासून तयार मिठाईची मागणी वाढली आहे. रसगुल्ला आणि काजू कतलीला ग्राहत पसंती देत आहेत. उस्मानाबादमध्ये ३६ वर्षांपासून खव्यापासून बनवलेल्या गुलाब जामुनचे राज्य कायम आहे.

### गुजरातमध्ये लाडूला पसंती, खवा मिठाई आली अर्ध्यावर

बडोदा शहरात २००० पासून मिठाईचा व्यवसाय करणारे उमाकांतभाई म्हणाले की, परंपरागत मिठाई तुपापासून बनते. खव्याची मिठाई काही दिवसांत तूप सोडते. त्यामुळे सणांत लोक म्हैसूरपाक, मोतीचूर लाडू आणि काजूची मिठाई जास्त खरेदी करतात. बडोद्याचे व्यावसायिक राकेश सुखडिया म्हणाले की, आधी ७०% मिठाई खव्यापासून बनत होती. ५ वर्षांत ती घटून ३५-४० टक्क्यांवर आली आहे. अर्थात पारंपरिक मिठायांच्या मागणीत ५०% वाढ झाली आहे. अहमदाबादमध्ये काजू कतली आणि सुकामेव्याच्या मिठाईला जास्त पसंती आहे.

### पंजाब : मिल्क केकची धूम

जालंधरच्या लव्हली स्वीट ग्रुपचे उपाध्यक्ष नरेश मित्तल म्हणाले की, आधी मोतीचूर लाडूंना मागणी होती. आता ते थोडे घेतले जातात. काजू बर्फी, सुकामेवा, मिठाई, मिल्क केक, खव्याच्या मिठाया आता जास्त विकत आहेत. नवांशहरच्या दुकानदारांनुसार, गेल्या ४-५ वर्षांपासून शुगर फ्री मिठाया आणि कमी गोड मिठाया घेतल्या जात आहेत. गुलाब जामुन, बर्फी आणि मिल्क केकची मागणी कायम आहे. गुरदासपूरमध्ये आता पिस्ता बर्फी, चॉकलेट बर्फी, कोकोनट बर्फीला मागणी आहे. पतियाळात आधीच्या तुलनेत जिलेबीचे खरेदीदार अगदी मोजके राहिले आहेत.

### हरियाणा : मूग मिठाईत वाढ

हरियाणा हलवाई संघटनेचे ज्येष्ठ उपाध्यक्ष सुरेशकुमार गुप्ता म्हणाले की, चांगले दूध मिळत नसल्याने हलवायांना अडचणींचा सामना करावा लागत आहे. अलीकडे डेअरीतच दूध पावडरद्वारे मिठाया बनवतात. पानिपतचे प्रमोद कुमार म्हणाले की, आता लोक काजू आणि मूग डाळीपासून तयार मिठाया जास्त खरेदी करतात. खव्याची मिठाई घेत नाहीत. हिसारच्या प्रतिष्ठित दुकानदारांनी सांगितले की, आमच्याकडे गुलाब जामून, रसगुल्ल्याची विक्री जास्त होते. सणात त्यांची मागणी खूप वाढते. ग्रामीण भागात आजही जिलेबी खूप विकते.

Divya Bhaskar (Ahmedabad) 1 October, 2017

## દિવાળીએ દેશમાં ૩.16 હજાર કરોડની મીઠાઈ વેચાવાનું અનુમાન

# પહેલી પસંદ ગુલાબ જાંબુ, આ દિવાળીએ 3200 કરોડના વેચાશે

ધર્મેન્દ્ર સિંહ ભદૌરિયા | નવી દિલ્હી
કેતનસિંહ રાજપૂત | અમદાવાદ, ભરત સિસોદિયા | જયપુર

દિલ્હીના મયૂર વિહારમાં રહેતા વી. સુમન તહેવારની સિઝનમાં હવે રસગુલ્લાં વધારે ખરીદે છે. તે કહે છે કે હવે ખાવાનો ટ્રેન્ડ બદલાઈ રહ્યો છે. પહેલાં હું માવાની મીઠાઈ લાવતો હતો પરંતુ ભેળસેળના ભયને કારણે રસગુલ્લાં-ગુલાબજાંબુ વધારે ખરીદું છું. આ પસંદ ફક્ત સુમનની જ નથી. દેશમાં વેચાતી તમામ મીઠાઈઓમાં ગુલાબજાંબુ- રસગુલ્લાંને સૌથી વધુ પસંદ કરાય છે. દિલ્હીમાં જ 70થી વધુ મીઠાઈની દુકાન ચલાવતા તરુણ સાહની કહે છે કે હવે ટ્રેન્ડ બદલાઈ રહ્યો છે. અમારી પિસ્તા બરફી સર્વાધિક પ્રસિદ્ધ છે પરંતુ દિવાળી પર અમે ગુલાબજાંબુ અને રસગુલ્લાં સૌથી વધુ વેચીએ છીએ. તે કહે છે કે હવે લોકો સ્વાસ્થ્ય પ્રત્યે વધારે સચેત છે એટલા માટે ઘી, વધારે ગળ્યું અને માવાવાળી મીઠાઈ ખરીદવાથી બચે છે.

ઉદ્યોગ સંગઠન એસોચેમ મુજબ દેશમાં ચાલુ વર્ષે 65 હજાર કરોડ રૂપિયાથી વધારેની મીઠાઈ ખરીદાશે તેવો અંદાજ છે જ્યારે આ દિવાળીએ લગભગ 16 હજાર કરોડ રૂપિયાની મીઠાઈ વેચાશે તેવો અંદાજ છે. ગત વર્ષની સરખામણીએ આ 10થી 15 ટકા વધારે વેચાશે. આ આંકડામાં ચોકલેટનું વેચાણ સામેલ નથી. દેશમાં સર્વાધિક પસંદગી પામતી મીઠાઈ ગુલાબજાંબુ-રસગુલ્લાં છે. મીઠાઈના કુલ વેચાણમાં 20થી 25 ટકા ભાગીદારી ગુલાબજાંબુ- રસગુલ્લાંની છે. તેના બાદ પસંદગી પામતી મીઠાઈઓમાં મૈસૂર પાક, બદામ હલવા, સોનપાપડી, બંગાળી મીઠાઈ સામેલ છે. હાલમાં લોકો ઓનલાઈન મીઠાઈ ખરીદી રહ્યા છે. મીઠાઈના વેપારીઓ અને વિષય વિશેષજ્ઞો મુજબ ગત વર્ષોમાં આ પરિવર્તન જરૂરથી જોવા મળ્યું છે કે લોકો હવે મીઠાઈમાં સુગરનું પ્રમાણ ઓછું ઈચ્છે છે.

## કાજુ કતરી અને લાડુ ટોપ ટ્રેન્ડમાં

■ શ્યામ દ્વિવેદી | પાણીપત ■ મહેશ જોશી | ઔરંગાબાદ ■ કૃણાલ પેઠે | વડોદરા ■ ઈમરોજ ખાન | ગ્વાલિયર ■ સુભાષ ચંદેર | હિસાર

### ગુજરાતમાં લાડુ વધારે, માવાની મીઠાઈ અડધી જ રહી ગઈ છે

વડોદરામાં 200 વર્ષથી મીઠાઈનો બિઝનેસ કરતા ઉમાકાંતભાઈ કહે છે કે પરંપરાગત મીઠાઈ ઘીમાંથી બને છે. માવાની મીઠાઈ અમુક સમય બાદ ઘી છોડવા લાગે છે એટલા માટે તહેવારમાં લોકો મૈસૂર પાક, મોતીચૂરના લાડુ તથા કાજુની મીઠાઈ વધારે ખરીદે છે. વડોદરાના મીઠાઈના વેપારી રાકેશ સુખડિયા કહે છે કે પહેલાં 70 ટકા મીઠાઈ માવાની બનતી હતી. 5 વર્ષમાં આ ઘટીને 35-40% સુધી આવી ગઈ. જોકે ટ્રેડિશનલ મીઠાઈની માગમાં 50% વધારો થયો છે.

### મહારાષ્ટ્રમાં ટ્રેડિશનલ મીઠાઈની બરાબરીમાં કાજુકતરી

ઔરંગાબાદમાં લગભગ દસ વર્ષથી તહેવારોની સિઝનમાં માવાની બનેલી મીઠાઈનું ચલણ હતું પરંતુ બે વર્ષથી કાજુકતરી, કાજુકમળ, કાજુગજક જેવી મીઠાઈઓ વધારે વેચાવા લાગી છે. બીડ શહેરમાં પણ પારંપરિક મીઠાઈઓની જગ્યા હવે કાજુકતરીએ લઈ લીધી છે. સોલાપુરમાં ટ્રેડિશનલ મીઠાઈઓ જેમ કે ગુલાબજાંબુ, પેંડા, લાડુની માગ હજુ પણ યથાવત્ છે. લાતૂરમાં પણ દૂધમાંથી બનાવેલી મીઠાઈની માગ વધી છે. બંગાળના રસગુલ્લાં અને કાજુકતરી ગ્રાહક વધારે પસંદ કરવા લાગ્યા છે.

### પંજાબમાં મિલ્ક કેકની ધૂમ

જલંધરના લવલી સ્વીટ ગ્રૂપના વાઈસ ચેરમેન નરેશ મિત્તલ મુજબ પહેલા મોતીચૂરના લાડુની માગ વધારે હતી. હવે ફક્ત શગુન તરીકે જ તેની ખરીદી કરાય છે. કાજુબરફી, ડ્રાયફ્રૂટ, મીઠાઈ, મિલ્ક કેક, માવાની બનેલી મીઠાઈઓ હવે વધારે વેચાઈ રહી છે. નવાશહેરના દુકાનદારો મુજબ ગત 4-5 વર્ષની શુગર-ફ્રી મીઠાઈઓ તથા એવી મીઠાઈઓનું ચલણ વધી રહ્યું છે જેમાં શુગર ઓછી હોય. ગુલાબજાંબુ, બરફી તથા મિલ્ક કેકની માગ યથાવત્ છે. ગુરુદાસપુરમાં હવે પિસ્તા બરફી, ચોકલેટ બરફી, કોકોનટ બરફી પસંદ કરે છે. પટિયાલામાં પહેલાના મુકાબલે જલેબીના ગ્રાહકો હવે પસંદગીના જ રહી ગયા છે.

### હરિયાણામાં મગની દાળની મીઠાઈમાં વધારો

હરિયાણા કંદોઈ એસોસિયેશનના વરિષ્ઠ ઉપપ્રમુખ સુરેશકુમાર ગુપ્તા કહે છે કે સારું દૂધ ન મળતા કંદોઈ ભારે મુશ્કેલીનો સામનો કરી રહ્યા છે. હાલમાં ડેરીઓમાં દૂધ પાઉડરની મદદથી મીઠાઈ તૈયાર કરાઈ રહી છે. પાણીપતના પ્રમોદકુમારે જણાવ્યું કે હવે લોકો કાજુ અને મગ દાળની મીઠાઈ વધારે ખરીદે છે . માવાની મીઠાઈ ખરીદવાથી બચે છે. હિસારના પ્રતિષ્ઠિત દુકાનદારો કહે છે કે અમારે ત્યાં સૌથી વધુ ગુલાબજાંબુ, રસગુલ્લાં વેચાય છે. તહેવારોમાં તેની માગ વધી જાય છે. ગ્રામીણ વિસ્તારોમાં અહીં આજે પણ જલેબી સૌથી વધુ વેચાય છે. હરિયાણામાં દૂધની મીઠાઈના બદલે માવાની મીઠાઈનું ચલણ વધારે છે.